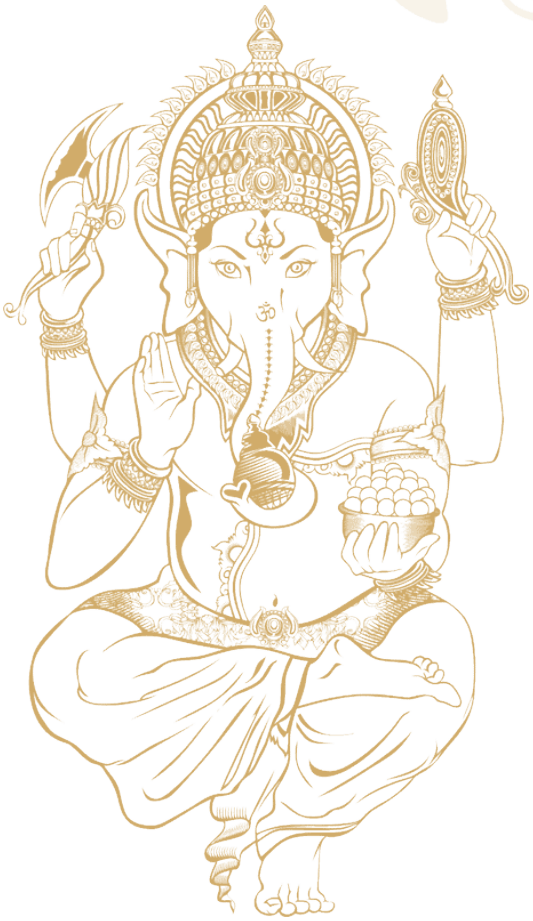

Mukesh kumar

16 Apr 2026

03:11 PM

Delhi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121950001**

तिथि 16/04/2026 समय 15:11:00 वार गुरुवार स्थान Delhi चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:33
अक्षांश 28:39:00 उत्तर रेखांश 77:13:00 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	04:28:04 घं
वेलान्तर	00:00:10 घं
सूर्योदय	05:55:06 घं
सूर्यास्त	18:47:20 घं
चैत्रादि संवत	2083
शक संवत	1948
मास	वैशाख
पक्ष	कृष्ण
तिथि	14
नक्षत्र	रेवती
योग	वैधृति
करण	शकुनि

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	गज
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युंजा	पूर्व
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दे-देवांशु
पाया(रा.-न.)	लौह-स्वर्ण
होरा	सूर्य
चौघड़ियां	अमृत

विंशोत्तरी

बुध 16वर्ष 0मा 29दि

बुध

16/04/2026
16/05/2042

बुध	12/10/2027
केतु	08/10/2028
शुक्र	09/08/2031
सूर्य	15/06/2032
चन्द्र	14/11/2033
मंगल	11/11/2034
राहु	31/05/2037
गुरु	06/09/2039
शनि	16/05/2042

योगिनी

उल्का 5वर्ष 8मा 3दि

उल्का

16/04/2026
19/12/2031

उल्का	19/12/2026
सिद्धा	18/02/2028
संकटा	19/06/2029
मंगला	19/08/2029
पिंगला	19/12/2029
धान्या	19/06/2030
भ्रामरी	18/02/2031
भद्रिका	19/12/2031

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं-	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			15:35:22	सिंह	पू.फ़ाल्गुनी	1	शुक्र	सूर्य	---	0:00			
सूर्य			02:11:22	मेष	अश्विनी	1	केतु	शुक्र	उच्च राशि	2.13	कलत्र	पितृ	सम्पत
चन्द्र			17:23:14	मीन	रेवती	1	बुध	बुध	सम राशि	1.19	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	10:53:37	मीन	उ.भाद्रपद	3	शनि	सूर्य	मित्र राशि	1.21	पुत्र	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			07:34:33	मीन	उ.भाद्रपद	2	शनि	केतु	नीच राशि	1.05	ज्ञाति	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			22:53:07	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.36	अमात्य	धन	मित्र
शुक्र			26:18:28	मेष	भरणी	4	शुक्र	केतु	सम राशि	1.19	आत्मा	कलत्र	विपत
शनि		अ	13:12:49	मीन	उ.भाद्रपद	3	शनि	राहु	सम राशि	1.28	मातृ	आयु	अतिमित्र
राहु	व		13:48:58	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	वध
केतु	व		13:48:58	सिंह	पू.फ़ाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

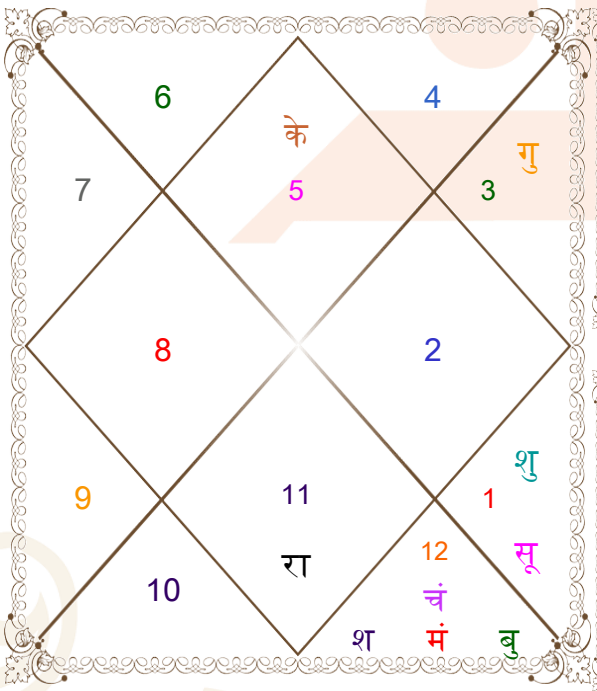

चन्द्र कुंडली

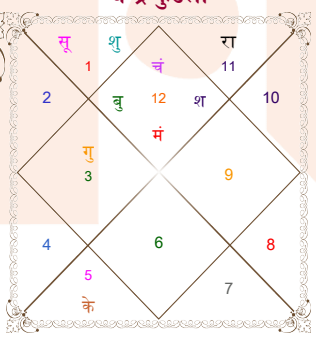

नवमांश कुंडली

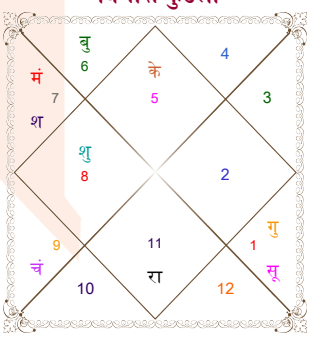

सर्वाष्टकवर्ग

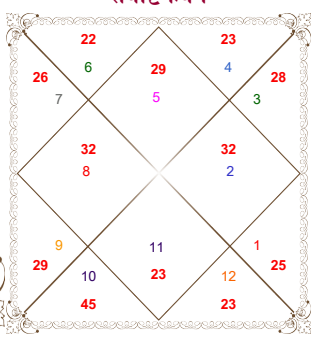

दशमांश कुंडली

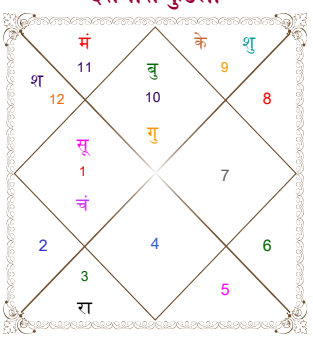

Mukesh Kumar Shakya
A3 Ring Road New Delhi
8178141028
mukeshshakya.futurepoint@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म रेवती नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि मीन तथा राशि स्वामी बृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण ब्राह्मण, गण देव, नाड़ी अन्त्य, योनि गज तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ 'दे' अक्षर से होगा। यथा- देवराज, देवेश आदि

रेवती की गणना गण्डमूल नक्षत्र में की जाती है, यद्यपि प्रथम चरण में जन्म लेने वालों को सरकार से सम्मान मिलना तय है। लेकिन इसकी शान्ति जन्म के बाद पहले महीने में या छह महीने के भीतर किया जाना आवश्यक है। इसके लिए लड़के के माता-पिता इस नक्षत्र के मन्त्र का 28000 बार जाप कराकर उसका दशम हवन कराएं। इससे शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

आप स्वभाव से एक भद्रपुरुष होंगे तथा समाज में अन्य जनों से आपका व्यवहार मधुर एवं मित्रतापूर्ण रहेगा। धनैश्वर्य से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से नियन्त्रण रखेंगे तथा संयमशील जीवन व्यतीत करने में तत्पर रहेंगे। आप ईमानदारी से धनार्जन करेंगे तथा स्वच्छ मन से व्यापारादि कार्यों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही आप तीव्र बुद्धि के भी स्वामी होंगे एवं सर्वदा बुद्धिमानी से अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

जातकाभरणम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वभाव वाला, ऐश्वर्य युक्त, जितेन्द्रिय, नेक नीयत से द्रव्य लाभ करने वाला तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है।

आप शरीर के समस्त सुन्दर अंगों से सर्वदा परिपूर्ण रहेंगे एवं समाज के सभी वर्गों में आपकी लोकप्रियता रहेगी एवं सभी लोग आपको यथोचित मान-सम्मान प्रदान करेंगे। आप में वीरता एवं शौर्यगुणों की प्रधानता रहेगी तथा साहसिक एवं पराक्रमी कार्यों को करने के लिए आप नित्य तत्पर रहेंगे। साथ ही आप निर्मल हृदय के व्यक्ति होंगे तथा समाज के सभी वर्गों के लिए आपके मन में प्रेम तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त धन-धान्य से भी सुसम्पन्न रहकर एक धनाढ्य पुरुष के रूप में आपकी सामाजिक ख्याति रहेगी।

बृहज्जातकम

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला जातक शारीरिक अंगों से पूर्ण सम्पन्न, सर्वसमाजप्रिय, रणप्रिय, हृदय से शुचि एवं धन से सुसम्पन्न होता है।

आप अपने समस्त सांसारिक कार्यों को कुशलतापूर्वक सम्पन्न करेंगे। आप एक सज्जन पुरुष होंगे एवं अन्य जनों के साथ सज्जनता का ही व्यवहार करेंगे। आप विविध प्रकार के शास्त्रों का परिश्रमपूर्वक ज्ञान अर्जित करेंगे तथा समाज में एक विद्वान पुरुष के रूप में प्रतिष्ठा तथा सम्मान अर्जित

करेंगे। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप सुशोभित रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

मानसागरी

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सब अंगों से पूर्ण, पवित्र, कार्यों में दक्ष, साधु, शूरवीर, पंडित एवं धन धान्यों से सर्वथा अलंकृत रहता है।

आप के मन में कामभावना की प्रबलता रहेगी तथा यदा कदा आप इससे व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे। साथ ही आपकी जंघाओं में भी कोई निशान या चिह्न हो सकता है। आप देखने में एक सुन्दर पुरुष होंगे तथा सलाह देने के कार्य में अत्यन्त ही निपुण रहेंगे इससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। आप सुन्दर एवं गुणवान पुत्रों से हमेशा युक्त रहेंगे तथा आपके मित्र भी शिक्षित एवं गुणवान लोग रहेंगे। आप दृढ़ संकल्प के व्यक्ति होंगे तथा अपने सम्पूर्ण कार्यों को दृढ़ता से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके पास स्थिर रूप में लक्ष्मी का निवास भी रहेगा अतः आपका सम्पूर्ण जीवन प्रसन्नता एवं सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जातकपारिजातः

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य जंघाओं में चिह्न वाला, कामातुर, सुन्दर, मन्त्री या सलाह देने वाला, दृढ़, श्रीयुत, स्त्री, पुत्र तथा मित्रों से युक्त होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीड़ित रहता है। किन्तु आपकी जन्म कुंडली में चन्द्रमा शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा धन-सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा-कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

मीन राशि में जन्म होने के कारण आपका शारीरिक स्वरूप सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा। साथ ही आपका मस्तक विस्तृत तथा नाक ऊँची रहेगी। आपकी आँखें सुन्दर होंगी तथा शरीर के अंग सुन्दर एवं सुडौल रहेंगे साथ ही आप का कटिभाग क्षीण रहेगा आपकी शिल्प या चित्रकारी में विशेष रुचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में आप परिश्रमपूर्वक सफलता एवं ख्याति अर्जित करने में सफल रहेंगे। शत्रुवर्ग को पराजित तथा भयभीत करने में आप नित्य समर्थ रहेंगे एवं वे भी आपका विरोध करने में प्रायः असमर्थ ही रहेंगे। आपको कई शास्त्रों का अच्छा ज्ञान रहेगा अतः समाज में एक विद्वान के रूप में भी आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। संगीत शास्त्र के प्रति भी आपका सम्मान रहेगा एवं समयानुसार आप इसका ज्ञानार्जन करने के लिए भी उत्सुक एवं तत्पर रहेंगे। आप में धार्मिकता की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा जीवन में यत्नपूर्वक समस्त धार्मिक प्रवृत्तियों का आप अनुपालन करते रहेंगे। स्त्री वर्ग के

मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा इनसे आपके मित्रतापूर्ण मधुर सम्बन्ध भी रहेंगे। आप अपने सम्भाषण में नित्य मधुर एवं प्रिय वाणी का उपयोग करेंगे जिस से अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। आप कई प्रकार के भौतिक सुख संसाधनों से सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आप क्रोध के अल्प भाव से भी युक्त रहेंगे। राजकीय सेवा में भी आपकी नियुक्ति होगी तथा खान से निकाले गए द्रव्यों से आप पूर्ण लाभार्जन करेंगे। लेकिन आप पूर्ण रूप से स्त्री के वश में रहेंगे एवं सभी आवश्यक सांसारिक कार्यों को उसी के कथन तथा निर्देशानुसार सम्पन्न करेंगे। आप अच्छे स्वभाव से भी युक्त रहेंगे एवं अन्य जनों से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे। इसके अतिरिक्त समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि में सैर करने में आपकी हार्दिक रुचि रहेगी तथा इससे आपको अतीव आनन्द की प्राप्ति होगी। साथ ही दानशीलता का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा एवं यथा शक्ति जीवन में इस प्रवृत्ति का आप अनुपालन करते रहेंगे।

सारावली

आप जल या समुद्र से उत्पन्न द्रव्य या मोती शंख आदि रत्नों से युक्त रहेंगे एवं इनसे आप पूर्ण लाभ प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आप जीवन में किसी अन्य व्यक्ति मित्र या संबंधी की धन संपत्ति भी प्राप्त करेंगे एवं सुख पूर्वक उसका उपभोग करेंगे। नारी वस्त्रों के प्रति आपके मन में विशेष आसक्ति का भाव रहेगा। साथ ही आपका शारीरिक कद भी मध्यम ही रहेगा।

बृहज्जातकम्

आप दिन में कई बार जल पीने की इच्छा भी प्रकट करेंगे। आपका अपनी पत्नी के ऊपर पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उससे आप हमेशा पूर्ण रूप से प्रसन्न तथा संतुष्ट रहेंगे जिससे आपका गृहस्थ जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक उच्च कोटि के विद्वान भी होंगे तथा कृतज्ञता के भाव से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं अन्य लोगों के द्वारा उपकृत होने पर उनका उपकार हार्दिक रूप से स्वीकार करेंगे तथा उनका आभार भी प्रकट करेंगे। आपके सद्गुणों से सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं संतुष्ट रहेंगे। इसके साथ ही आप एक सौभाग्यशाली पुरुष भी होंगे एवं जीवन में आपके अधिकांश महत्वपूर्ण कार्य भाग्य बल से ही सफल होते रहेंगे।

फलदीपिका

इन्द्रियों को वश में करने में आप सफल रहेंगे तथा संयमपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। आप स्वभाव से ही चतुर एवं बुद्धिमान भी रहेंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को चतुराई एवं बुद्धिमानी से पूर्ण करेंगे। जल क्रीड़ा के प्रति आपके मन में तीव्र उत्सुकता का भाव रहेगा एवं इससे आप अत्यन्त ही संतुष्टि प्राप्त करेंगे। साथ ही आप निर्मल बुद्धि से युक्त रहेंगे।

जातकाभरणम्

जीवन में आपका अधिकांश समय जीविकोपार्जन के कार्यों में ही व्यतीत होगा तथा कभी कभी लाभ मार्ग भी अवरुद्ध होंगे इससे आपको यदा कदा आर्थिक कठिनाई का भी सामना करना पड़ेगा। आप का शरीर कान्ति युक्त रहेगा तथा इससे आपकी शारीरिक सौन्दर्य तथा व्यक्तित्व के आकर्षण में वृद्धि होगी। पिता से आपको पूर्ण धन संपत्ति की प्राप्ति होगी तथा आप सुखपूर्वक इसका

जीवन में उपभोग कर सकेंगे। आप एक साहसी पुरुष होंगे तथा नित्य साहसिक कार्यों को करने के लिए उत्सुक तथा तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप में सन्तोष का भी भाव विद्यमान रहेगा तथा जो कुछ भी उपलब्ध होगा उसी से आप प्रसन्न तथा संतुष्ट रहेंगे।

जातकदीपिका

आप स्वभाव से गंभीर प्रवृत्ति से युक्त रहेंगे तथा शौर्यादि गुणों से हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे। समाज में एक गणमान्य एवं प्रधान पुरुष के रूप में आप श्रद्धेय तथा आदरणीय रहेंगे। आप में कृपणता का भाव भी रहेगा तथा धन संचय के प्रति रुचिशील स्वभाव होने के कारण अन्य लोग कभी कभी आपसे असुविधा महसूस करेंगे। आप अपने परिवार तथा कुल में सर्वप्रिय होंगे एवं पारिवारिक जनों से आपको यथोचित सम्मान तथा स्नेह की प्राप्ति होगी। सेवा कार्यों में भी आपकी प्रवृत्ति रहेगी एवं नित्य इनके लिए उत्सुक एवं तत्पर रहेंगे। आप तीव्रगति से चलना पसन्द करेंगे। साथ ही आपका आचरण श्रेष्ठ रहेगा तथा अन्य लोग भी आपसे प्रभावित रहेंगे। इसके साथ ही बंधुवर्ग में भी आप अत्यन्त प्रिय रहेंगे।

मानसागरी

इस प्रकार अपने आकर्षक एवं सुंदर व्यक्तित्व एवं विद्वत्ता से युक्त रहकर समाज में पूर्ण सम्मान अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही महिलावर्ग में भी आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा कई लोगों से आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध भी रहेंगे।

जातक पारिजातः

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी मधुर तथा श्रेष्ठ रहेगी जिसे सुनकर अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा संतुष्ट रहेंगे। आपकी बुद्धि सरलता के गुण से युक्त रहेगी एवं सब कुछ सादगी से ग्रहण करने की प्रतिभा से आप युक्त रहेंगे। आप अल्प मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगे एवं इसके लिए आप विशेष रुचिशील रहेंगे। दूसरे लोगों के गुणों को जानने में निपुण रहेंगे तथा अच्छे बुरे की पहचान करने में सर्वथा समर्थ रहेंगे। साथ ही श्रेष्ठजनों द्वारा प्रतिपादित सद्गुणों से आप सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगे। इसके साथ ही आप धन वैभव तथा भौतिक सुखसंसाधनों से भी सर्वदा युक्त रहेंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

आपका शारीरिक स्वास्थ्य सुन्दर एवं दर्शनीय रहेगा तथा दानशीलता की भावना भी आप में विद्यमान रहेगी एवं समयनुसार आप यथा शक्ति इसका अनुपालन करते रहेंगे। आप सादगी पसन्द व्यक्ति होंगे एवं अनावश्यक दिखावे से हमेशा दूर ही रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक विद्वान पुरुष होंगे एवं समाज में पूर्ण रूप से ख्याति अर्जित करेंगे।

जातकाभरणम्

अर्थात् देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बुद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली

होता है।

गज योनि में उत्पन्न होने के कारण आप राजप्रिय होंगे अर्थात् उच्चपदाधिकारियों तथा मंत्रियों आदि से आपके मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होता रहेगा। आप एक बलवान पुरुष होंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को स्वबल से ही सम्पन्न करेंगे। आपको जीवन में समस्त भौतिक एवं सांसारिक सुखों की प्राप्ति होती रहेगी एवं सुख पूर्वक आप जीवन में इनका उपभोग करेंगे। आप किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति के सहयोगी या स्वयं भी उच्चाधिकार सम्पन्न कोई अधिकारी हो सकते हैं। आप में उत्साह की भावना की प्रबलता रहेगी एवं अपने कठिन से कठिन कार्यों को भी सोत्साह सम्पन्न करने में सफल रहेंगे।

मानसगरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्मकाल में चंद्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिंतनशील रहेंगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी-कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा-कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आएगी, लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धांतिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरांत स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है, अतः आपके भाई-बहनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा-कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति

उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। वे धन-धान्य से प्रायः संपन्न रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा-कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख-दुख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उन्हें हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परंतु यदा-कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा, परंतु यह तनाव अस्थायी रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन की सभी विषम परिस्थितियों में आप सर्वदा उनकी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पौर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर एवं कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5, 10, 15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय-विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार चतुर्थ प्रहर एवं कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभकार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में आपको शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी पूर्ण रूप से सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक चिंताएं, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की श्रद्धापूर्वक आराधना करनी चाहिए तथा बृहस्पतिवार के नियमित रूप से उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत वस्त्र, पीत चन्दन, हल्दी तथा चने की दाल आदि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिंताएं समाप्त होंगी तथा अशुभ प्रभाव भी खत्म होंगे एवं सर्वत्र शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी तथा लाभमार्ग प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त बृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16,000 जप भी किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए।

मंत्र- ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः।

Mukesh Kumar Shakya
A3 Ring Road New Delhi
8178141028
mukeshshakya.futurepoint@gmail.com